दिनांक 04-02-1974 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

ज्ञान को स्वयं में समाने से ही अनमोल मोती और अमोघ शक्ति की प्राप्ति

मिलने आया है बच्चों से सर्वशक्तियाँ देने वाला
ज्ञान का खज़ाना देकर सबको खुश करने वाला

ज्ञान के हर महावाक्य मोती के समान कहलाते
ज्ञान मोती जो धारण करे वे पदमपति बन जाते

ज्ञान के हर वाक्य प्रति स्वयं को चातक बनाओ
हर महावाक्य धारण कर इनको अनमोल बनाओ

ज्ञान का हर महावाक्य जब जीवन में समाओगे
अपने चेहरे पर खुशी की स्पष्ट झलक पाओगे

ईश्वरीय कमाई जाँच करने का अभ्यास बनाओ
नुकसान से मुक्ति पाकर एकरस कमाई बढ़ाओ

पुराने कर्मों का खाता सम्पूर्ण रीति से चुकाओ
माया ये कर्ज उतारकर हर मर्ज से मुक्ति पाओ

कर्ज चाहे कोई भी हो वो विघ्न रूप बन जाता
एकाग्रता को नष्ट करके मन बुद्धि को भटकाता

सभी प्रकार के कर्जों से खुद को हल्का बनाओ
एक बाप को याद करके चढ़ती कला में आओ

अलबेले बनकर किसी बात में धोखा ना खाना
सर्वशस्त्रधारी बनकर हर विघ्न पर विजय पाना

ज्ञान स्वरूप बनकर सेवा के नए प्लान बनाना
शक्ति स्वरूप बनकर प्लान को साकार बनाना